ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.519
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
Apr-May-June 2024
Vol. 13 No. 2

भारतीय पारिवारिक अर्थव्यवस्था के संचालन में महिलाओं का योगदान:- एक विचारधारा

डॉ बंदना श्रीवास्तव

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

***Corresponding Author:** डॉ बंदना श्रीवास्तव*

DOI - 10.5281/zenodo.14523249

भारतीय परिवार का अर्थ:

वास्तव में भारतीय परिवारों को पिता या माता के मुताबिक पिट्टसताप्मक और माट्टसताव्मक के रूप में बांध जाता है। परिवार की संरचना परिवार में भुमिका शक्ति स्थिती और संबंधों के विन्यास पर निर्भर करती है। जो परिवारों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभुमि परिवार के पैटर्न और शहरीकरण की सीमा पर निर्भर करता है।

वहीं दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है की परिवार जन्म, विवाह या गोद लेने से संबंधित दो या दो से अधीक व्यक्तियों का समूह है जो एक साथ रहते हैं ऐसे सभी संबंधित व्यक्तियों को एक परिवार के सदस्य माना जाता है।

परिवार शब्द अंग्रेजी भाषा के लैकिन के ‘‘फैमिलिया’’ और फैमुलस से आया है जिसका अर्थ है “घर के दास” और “दास”।

यह दास वास्तव में घर का मालिक होता है।

बर्गेस और लॉक के मुताबिक - परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें लोग विवाह, रक्त, या दतक-संबंध से जुड़े होते है।

अतःमूल रूप में परिवार में पति और पत्नी, माता और पिता, पूत्र और पूत्री, भाई और बहन की अपनी सामाजिक भुमिकाओं के माध्यम से एक दूसरे के साथ अंतः क्रिया और संवाद करते हूये एक साझा संस्कृति का निर्माण करता है।

भारतीय परिवार के प्रकार:

जहॉ तक भारतीय परिवारों के प्रकार की बात आती है तो यह दे प्रकार का होता है।

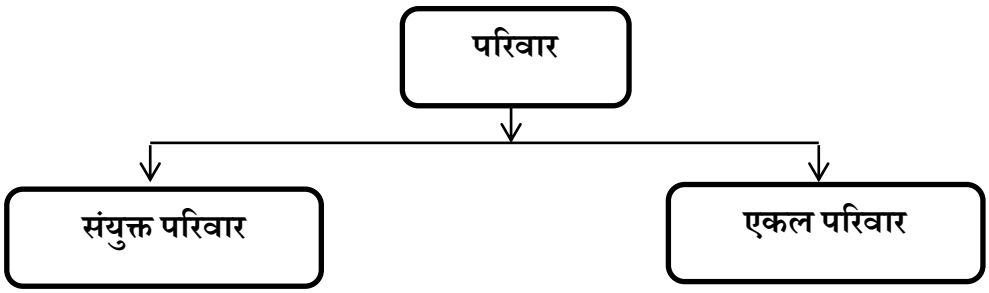

१. संयुक्त परिवार:

संयुक्त परिवार में दो या दो से ज्यादा पीढ़ी के लोग रहते है मतलब माता, पिता, बच्चे के अतिरिक्त चाचा, चाची दादा, दादी वगैरह सब होते हैं।

२. एकल परिवार:

एकल परिवार में माता पिता और उनके बच्चे भी होते हैं। परंतु यह विडम्बना है की भारत में संयूक्त परिवार कहीं-न-कहीं विलुप्त होते जा रहे हैं।

भारतीय परिवार की विशेषतायें:

परिवार का सम्बन्ध चाहे सभ्य समाजों से हो अथवा आदिम समाजों से सभी परिवारों में कुछ ऐसी विशेषतायें विधमान होती है जिनके आधार पर इन्हें अन्य समहों से प्रथक किया जा सकता है ये निम्नलिखीत हैः-

१. सर्वव्यापकता
२. भावनात्मक आधार
३. रचनात्मक प्रभाव
४. छोटा आकार
५. सामाजिक ढॉचे में केन्द्रीय स्थिती
६. सदस्यों की असीमित उतरढायित्व
७. सामाजिक नियंत्रण
८. परिवार का स्थाथी व अस्यायी स्वभवा इत्यादी। सहायता से भी स्पश्ट किया जा सकता है।

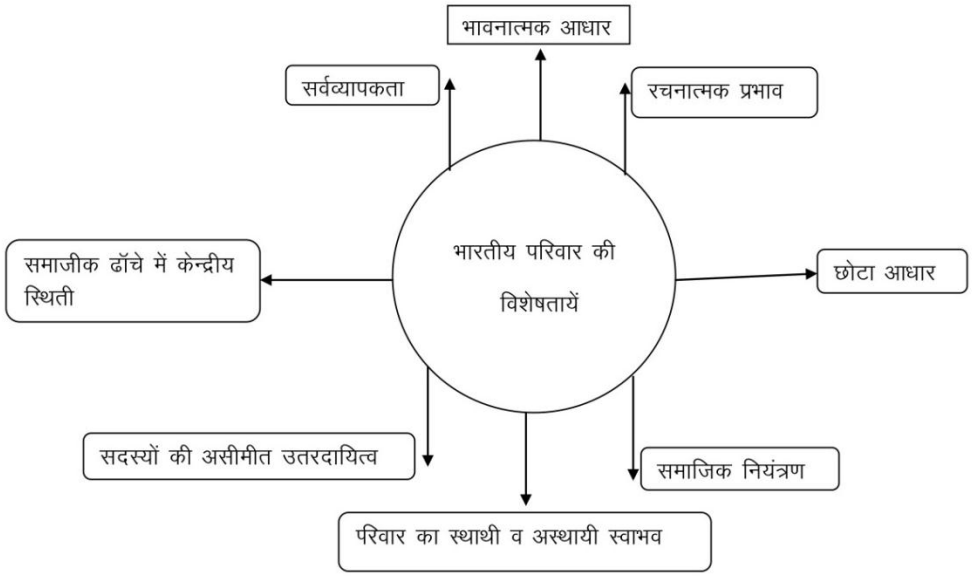

भारतीय अर्थव्यवस्था के संचालन में महिलाओं का योगदान:

हम जानते हैं की सकल घरेलू उत्पाद के १७ पर भारतीय महिलाओं का आर्थिक योगदान वैश्विक औसत के आधे से भी कम है। उदाहरण के लिये चीन में ४० की तुलना में प्रतिकूल है। यदि लगभग ५० महिलायें कार्यबल में शमिल हो सकती

है तो भारत अपनी वृद्धि को १५ प्रतिशत अंक बढाकर ९ प्रतिशत प्रति वर्श कर सकता है।

आज राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का बहुत बडा ही योगदान है आज की महिलाये राष्ट्र की प्रगति के लिये पुरुषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। खेतीबारी से लेकर वायुयान उड़ाने और अंतरिक्ष तक जा रही है। गॉव में आज महिलायें पंच सरपंच एवं मुखिया के पद पर काम कर रही है।

एक समाज में महिला का महत्वपूर्ण स्थान है। मदर टेरेसा ने पूरे देश में दीन दूखी पीड़ितों की आजीवन निस्वास सेवाकर राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अतः भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की निम्नलिखीत भुमिका हैः

१. भारत में महिला रोजगार संबंधी ऑकडे देश के आर्थिक विकास कम प्रजनन दर और स्कूली शिक्षा की दर में वृद्धि जैसे संकेत कों से मेल नहीं खाती।
२. वर्ष २०११-१९ के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यस्थलो पर महिलाओं की भागीदारी ३५.८ से घटकर २६.४ ही रह गई।
३. गौरतलब है किइस सर्वेक्षण में भारत एकमात्र ऐसा देश या जिसमें आर्थिक भागीदारी में लैंगिक अंतराल राजनितिक लैंगिक अंतराल से अधिक पाया गया।
४. वर्ष २०१९ मे ‘‘विश्व आर्थिक मंच world Economic From WEF की वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और इसके लिये उपलब्ध अवसरों के संदर्भ में भारत को १५३ देशों की सुची में १४९ वें स्थान पर रखा गया था।
५. हाल ही में जारी ‘‘आवधिक प्रमबल सेर्वक्षण PLFS २०१८-१९ के अनुसार कार्यक्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में भारी गिरवट देखने को मिलती है।
६. वर्ष २०१९ में जारी ऑक्सेफेम रिपोर्ट के अनुसार लिंग के आधार पर वेतन के मामले में होने वाले भेदभाव के मामले में एशिया के देश सबसे प्रमुख है एशिया में समान योग्यता के साथ कार्य करनेवाली महिलाओं को ३४ कम वेतन प्राप्त होता है।
७. वर्ष २००४ से वर्ष २०१८ के बीच स्कूली शिक्षा के मामले में घटते लैंगिक अंतराल के विपरीत कार्य क्षेत्रों में भागीदारी के संदर्भ में लैंगिक अंतराल में भारी वृद्धि देखने को मिलती है।
८. वर्ष २०१९ में जारी ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार लिंग के आधार पर वेतन के मामले में होने वाले भेदभाव के मामले में एशिया के देश सबसे प्रमुख हैं, एशिया में समान योग्यता के पद पर कार्य करने वाले महिलाओं को ३४ कम वेतन प्राप्त होता है।
९. अक्टूबर २०२० में जारी आवधिक क्रम बल सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर-दिसंबर २०१९ में महिला बेरोजगारी की दर ९८ रही जो वर्ष २०१९ में जुलाई-सितंबर

की तिमाही के ऑकड़ो से अधिक है गौरतलब है कि Covid -१९ महामारी के बाद देश भर में बेरोजगारी के ऑकडों में व्यापक वृद्धि देखी गयी।

निष्कर्ष:

अतः इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के समझ विधमान निराशा जनक आर्थिक असमानता के परिदृश्य में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। क्यों की वे अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक योगदान दे सकती है। भारत की महिलाओं की क्षमताओं को उजागर किये जाने से ही भारत की आर्थिक क्षमता को पूर्ण रूप से साकार किया जा सकता है। उन्हें कमजोर नहीं समझा जाना चाहीये बलिक एक मानव संसाधन के रूप में भारतीय पारिवारिक अर्थव्यवस्था के संचालन में आगे बढ़ाने का समान अवसर प्रदान किया जाना चाहीये ताकी वे अपने देश जीवन और व्यक्तित्व का खुलकर विकास कर सकें।

सन्दर्भ सुची:

१. मेहता,रमा, ‘‘द वेस्टर्न एजुकेटोड हिन्दू वूमन‘‘ बम्बई एशिया पबिलशिंग हाउस १९७०

२. छाटे, सी ए ‘‘द वर्किग वीमन‘‘ द पोजिशन ऑफ वीमन इन इण्डिया बम्बई १९७३

३. मसानी मेहरा, ‘‘वीमन एट वर्क‘‘ पोजिसन्स ऑफ वीमन्स इन इण्डिया बम्बई।